RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-02
February -2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

# भारतीय विदेश नीति की अवसर एवं चुनौतियॉं

डा0 मनोरमा कुमारी

(राजनीतिक विज्ञान)

किसी देश की विदेश नीति जिसे विदेशी संबंधों की नीति भी कहा जाता है अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा करने के लिए और अर्न्तराष्ट्रीय संबंधों के वातावरण में अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए राज्य द्वारा चुनी गई स्वहितकारी रणनीतियों का समुह होती है। किसी देश की विदेश नीति दुसरे देशों के साथ आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक तथा सैनिक विषयों पर पालन की जाने वाली नीतियों का एक समुह है।

विशेष रूप से सर्वप्रथम मॉडलस्की ने इसको परिभाषित करते हुए कहा था कि विदेश नीति समुदायों द्वारा विकसित उन क्रियाओं की व्यवस्था है जिसके द्वारा एक राज्य दुसरे राज्यों के व्यवहार को बदलने तथा उनकी गतिविधियों को अर्न्तराष्ट्रीय वातावरण में ढ़ालने की कोशिश करता है।

रोडी तथा क्रिस्टल–के अनुसार विदेश नीति के अर्न्तगत ऐसे समान्य सिद्धांतो का निर्धारण और कार्यान्वयन समलित है जो किसी राज्य को उस समय प्रभावित करते है जब वह अपने मत्वपूर्ण हीतों की रक्षा के लिए दुसरे राज्यों से बातचीत चलाता है।[1]परन्तु विदेश नीति की इस प्रकार की परिभाषा को अति सरलीकरण माना जाएगा। क्योंकि विदेश नीति का उद्देश्य मात्र दुसरों के व्यवहार का परिवर्त्तन मात्र नहीं हो सकता है। अपितु इसके माध्यम से दुसरे राज्यों की गतिविधियों का नियत्रंण करना भी अति आवश्यक होता है। इस प्रकार विदेश नीति में परिवर्त्तन के साथ–साथ कई बार निरंतरता की आवश्यकता भी होती है, क्योंकि विदेश नीति परिवर्त्तन एवं यथास्थिति दोनों प्रकार की नीतियों का समन्वय होता है। बल्कि फेलिम्स ग्रास तो इससे भी अलग तरह से परिभाषित किये है– "कई बार किसी राज्य के साथ कोई सम्बन्ध न होना या उसके बारे में कोई निश्चित नीति न होना भी विदेश नीति कहलाता है।" इस प्रकार विदेश नीति के साकारात्मक एवं नकारात्मक दोनो पहलू होते है। यह सकारात्मक रूप में जब होती है जब वह दूसरे राज्यों के व्यवहार का प्रयास करती है तथा नकारात्मक रूप में तब होती है जब वह दुसरे राज्यों के व्यवहार को परिवर्तित करने का प्रयास करती है।

भारतीय विदेश नीति के बुनियादी सिद्धांत उसकी सांस्कृतिक विरासत एवं ऐतिहासिक अनुभव पर आधरित है, विशेषकर गॉधी के नेतृत्व में आजादी के लिए लड़ी गई अहिंसक लड़ाई ने इन्हे प्रभावीत किया यह सिंद्धांत निम्नलिखित हैः–

शान्ति, निःशस्त्रीकरण, गुटनिरपेक्षता, सम्राज्यवाद तथा उपनिवेशवाद का विरोध।[2]

विदेश नीति उन सिद्धांतों, हितों व उद्देश्यों के प्रति वचनवद्धता है, जिनके द्वारा एक राज्य दुसरे राज्यों के साथ अर्न्तराष्ट्रीय संदर्भ में अपने संबंधों का निर्वाह करता है। इन संदर्भ में विदेश नीति पर निर्णय लेने के साथ–साथ इसका अन्य राज्यों के साथ संबंधों का वहन करना भी अति महत्वपूर्ण हो जाता है। लेकिन इस प्रकार के व्यवहार के समय राज्य को अपने लाभ–हानि अर्थात संसाधन एवं जोखिम दोनों का मुल्यांकन भी कर लेना चाहिए। विदेश नीति एक ढ़ॉचा है जिसके भीतर किसी देश की सरकार बाहरी दुनिया के साथ अपने संबंधों को अलग–अलग स्वरूपों यानी द्विपक्षीय, क्षेत्रीय और बहुपक्षीय रूप में संचालित करती है। वहीं कुटनीति किसी देश की विदेश नीति को प्राप्त करने की दृष्टी से विश्व के अन्य देशों के साथ संबंधों को प्रबंधित का एक कौशल है, किसी भी देश की विदेशनीति का विकास घरेलू राजनीति अन्य देशों की नीतियों या व्यवहार एवं विशिष्ट–भू–राजनीतिक परिदृष्यों से प्रभावित होती है।

## भारत की विदेश नीति का मुख्य उद्देश्यः–

सभी देशों के लिएराष्ट्रीय हित का दायरा अलग–अलग होता है। भारत के परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीय हित के अर्थ में क्षेत्रीय अखण्डता की रक्षा के लिए हमारी सीमाओं को सुरक्षित करना, सीमा पार आतंकवाद का मुकाबला, ऊर्जा सुरक्षा, खाद्य सुरक्षा, साइबर सुरक्षा आदि शामिल है।

अपनी विकास गति को बढ़ाने के लिए भारत को पर्याप्त विदशी सहायता की आवश्यकता होगी। विभिन्न परियोजनाओं जैसे मेक–इन–इण्डिया, स्किल इण्डिया, स्मार्ट सिटी, इन्फ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेन्ट, डिजिटल इंडिया, क्लीन इंडिया आदि को सफल बनाने के लिए भारत को विदेशी सहयोगी, विदेशी प्रत्यक्ष निवेश, वित्तीय सहायता और टेक्नोलॉजी की जरूरत है।

- ❖ भारत को पारंपरिक और गैर पारंपरिक खतरों से बचाना।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

- ❖ ऐसा वातावरण बनाना जो भारत के समावेशी विकास के लिए अनुकूल हो, जससे देश में गरीब से गरीब व्यक्ति तक विकास का लाभ पहुॅच सके।
- ❖ यह सुनिश्चित करना की वैश्विक मंचो पर भारत की आवाज सुनी जये और विभिन्न आयामों जैसे आतंकबाद, जलवायु परिवर्त्तन, निरस्त्रीकरण और वैश्विक शासन के मुद्दों को भारत प्रभावित कर सके।
- ❖ विदेश में भारतीय प्रवासियों को जोड़ना और उनके हितों की रक्षा करना।

भारतीय विदेश नीति के मुल–भूत सिद्धांत, पंचशील सिद्धांत उल्लेखनीय है कि पंचशील सिद्धांत को सर्वप्रथम वर्ष 1954 में चीन के तिब्बत क्षेत्र तथा भारत के मध्य संधि करने के लिए प्रतिपादित किया गया और बाद में इसका प्रयोग वैश्विक स्तर पर अर्न्तराष्ट्रीय संबंधों को संचालित करने के लिए भी किया गया। पॉच सिद्धांत निम्नलिखित हैः–

- एक दुसरे की क्षेत्रीय अखण्डता और सम्प्रभुता का पारस्परिक सम्मान।
- पारस्परिक आक्रमण न करना।
- परस्पर हस्तक्षेप न करना।
- समता और आपसी लाभ।
- शांतिपूर्ण सह अस्तित्व।

किसी भी देश की विदेश नीति इतिहास से गहरा संबंध रखती है। भारत की विदेश नीति भी इतिहास और स्वतंत्रता आन्दोलन से संबंध रखती है। ऐतिहासिक विरासत के रूप में भारत की विदेश नीति आज उन अनेक तथ्यों को समेटे हुए है जो कभी भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन से उपजे थे। शान्तिपूर्ण सहअसितत्व व विश्वशान्ति का विचार हजारो वर्ष पुराने उस चिंतन का परिणाम है जिसे महात्मा बुद्ध व महात्मागांधी जैसे विचारकों ने प्रस्तुत किया था। इसी तरह भारत की विदेश नीति में उपनिवेशवाद, साम्राज्यवाद व रंगभेद की नीति का विरोध महान राष्ट्रीय आंदोलन की उपज है। भारत के अधिकतर देशों के साथ औपचारिक राजनायिक संबंध है। जनसंख्या की दृष्टि से यह दुनिया का दुसरा सबसे बड़ा देश है। भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्रात्मक व्यवस्था वाला देश भी है और इसकी अर्थव्यस्था विश्व की बढ़ती अर्थव्यस्थाओं में से एक है।[3]

1947 से 1990:– 1950 के दशक में भारत ने पुरजोर रूप से अफ्रीका और एशिया में यूरोपीय उपनिवेशों की स्वतंत्रता का समर्थन किया और गुट निरपेक्ष आंदोलन में एक अग्रणी की भुमिका निभाई।[4]

1990 के बाद भारत ने क्षेत्रीय सहयोग और विश्व व्यापार संगठन के लिए एक दक्षिण एशियाई एसोसिएशन में प्रभावशाली भूमिका निभाई। भारत ने विभिन्न बहुपक्षी मंचों, सबसे खासकर पूर्वी एशिया के शिखर बैठक और जी–8, 5 में एक सक्रिय भागीदारी निभाई है। अर्थिक क्षेत्र में भारत का दक्षिण अमेरिका, एशिया और अफ्रीक के विकासशील देशों के साथ घनिष्ठ संबंध है।

**ब्रिक्सः–** भारत ने ब्राजील, रूस, चीन और दक्षिण अफ्रीका के साथ मिलकर ब्रिक्स समूह की स्थापना की है। यह विकसित देशों के समूह जी–8 एवं जी–20 के विश्व पर प्रभाव को संतुलित करने का प्रयास है। ब्रिक्स के सभी सदस्य विकासशील या नव–औद्योगीकृत देश है जिनकी अर्थव्यवस्था तेजी से बढ़ रहीं है। ये राष्ट्र क्षेत्रीय और वैश्विक मामलों पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालते है। वर्ष 2013 तक पांचों ब्रिक्स राष्ट्र दुनिया के लगभग 3 अरव लोगों का प्रतिनिधित्व करते है।

**भारत चीन संबंधः–**

भारत चीन दोनो पड़ोसी एवं विश्व के दो उभरती शक्तियॉ है। दोनों के बीच लंबी सीमा रेखा है। इन दोनों में प्राचीन काल से ही सांस्कृति तथा आर्थिक संबंध रहे है। 1946 में चीन के साम्यवादी शासन की स्थापना हुई। दोनों देशों के बीच मैत्री संबंध बराबर बने रहे। 1949 में नये चीन की स्थापना के बाद के अगले वर्ष भारत ने चीन के साथ राजनयिक संबंध स्थापित किये। इस तरह भारत चीन लोक गणराज्य को मान्यता देने वाला प्रथम गैर समाजवादी देश बना। 1954 के जून माह मे चीन, भारत व म्यान्मार द्वारा शान्तिपूर्ण सहअस्मिक के पॉच सिद्धांत यानी पंचशली प्रवर्तित किया गए। पंचशील चीन व भारत द्वारा दुनिया की शांति व सुरक्षा में किया गया एक महत्वपूर्ण योगदान था। परन्तु चीन में मैत्री संबंधो को छोड़कर 1962 में भारत पर आक्रमण कर दिया।

- लद्दाख–अरूणचल सीमा विवाद व आधुनिक समय में घुसपैठ की घटनाऍ।
- कश्मीरियों को स्टेपल वीजा की नीति।
- दक्षिण चीन सागर में भारत की तेल कम्पनियों व वियतनाम के साथ चीन का विवाद।
- पाक अधिकृत कश्मीर से होते हुए ग्वादर पोर्ट से शिनजियांग तक सड़क का निर्माण।
- पारस्परिक व्यापार में भारत का व्यापार घाटा।
- हुआवेई व अन्य कई चीनी कपनियों पर जासूसी का आरोप, बाल्को से भारतीय मिसाईल सामग्री की चोरी।

**सहयोगः–**

- भारत में चीनी कंपनियों का निवेश।
- चीनी माल का आयात।
- बुलेट ट्रेन की पेशकश।

**भारत–पाकिस्तानः–** भारत के पड़ोसी पाकिस्तान के साथ एक तनाव भरा संबंध है और दोनों देशों के बीच चार

बार युद्ध हुआ है, 1947, 1965, 1971 और 1999 में। कश्मीर विवाद इन युद्धों का प्रमुख कारण था।[5] भारत–पाकिस्तान संबंध में 1974 में जो त्रिपक्षीय जो समझौता हुआ उससे युद्धबन्दियों की समस्या का समाधान हुआ। 1974 में दोनों देशों में डाक, तार, यात्रा आदि विषयों के बारे में समझौता हुआ। 1976 में दोनों देशों ने कुटनीतिक सम्बंधों को पुनः स्थापित करने का निश्चय किया।[6]

**भारत और नेपाल संबंधों में**:– भारत और नेपाल अच्छे पड़ोसी है। भारत और नेपाल ने 1950 के भारत–नेपाल संधि के साथ शान्ति और मित्रता के साथ अपने संबंधों की शुरूआत की और दोनो देशों के बीच सुरक्षा संबंधों को परिभाषित करने वाले गुप्त पत्र और द्विपक्षीय व्यपार दोनों को नियंत्रित करने वाला एक समझौता किया। 1950 की संधि और पत्रों का भारत सरकार और राणा शासको के बीच आदान–प्रदान हुआ। नेपाल ने कहा कि "न तो सरकार किसी विदेशी आक्रमणकारी द्वारा दुसरे की सुरक्षा के लिए किसी भी खतरे को सहन करेगी"।

भारतीयों और नेपाली के बीच लोगों से लोगों के स्तर पर घनिष्ठ भाषई, वैवाहिक, धार्मिक और सांस्कृति संबंधों के बावजूद 2015 के अन्त से राजनीतिक मुद्दों और सीमा विवादों ने सरकार और लोगों के बीच बढ़ती भारतीय विरोधी भावना के साथ दोनों देशों के बीच संबंधों को तनावपूर्ण बना दिया है। दोनों देशों के बीच सीमा विवादों के कारण सरकार द्वारा अभी तक एक सीमा समझौते की पुष्टि की गई है।

**भारत श्रीलंका:–** भारत–श्रीलंका के बीच राजनीयिक संबंध है। श्रीलंका के केवल 4 प्रतिशत लोगों का भारत पर नकारात्मक दृष्टिकोण है। भारत के द्वीप के सबसे बड़े व्यापारिक साझेदार होने के साथ दोनों देश आर्थिक दृष्टि से भी करीब है और एक उन्नत स्तर पर चर्चा के तहत एक एकल बाजार स्थापित करने के लिए एक समझौता भी दोनों देशों के बीच गहरे नस्लीय और सांस्कृति संबंध है। भारत और श्रीलंका एक समुद्री सीमा साझा करते है। भारत श्रीलंका का एक मात्र पाड़ोसी है जिसे पालक जल डमरूमध्य द्वारा अलग किया गया है। दोनों राष्ट्र दक्षिण ऐशिया में एक रानीतिक स्थिति पर कब्जा कर लेते है और हिन्द महासागर में एक सामान्य सुरक्षा छतरी बनाने की मॉग की है। हालॉकि उन्हें श्रीलंकाई गृह युद्ध और युद्ध के दौरान भारतीय हस्तक्षेप के विवाद द्वारा पीरक्षण किया गया है। खासकर नौसैनिक समझौते के मामले में भारत ने संबंधों में सुधार किये तथा परमाणु ऊर्जा समझौता पर हस्ताक्षर किये है।

**भारत की वर्त्तमान विदेश नीति:–**

वर्त्तमानसरकार की विदेश नीति के अन्तर्गत वैश्विक शक्तियों के साथ आगे बढ़ने और अपने राष्ट्रीय हितों को सुरक्षित करते हुए भारत के सामरिक स्वायत्ता को बनाये रखना है। वर्तमान सरकार द्वारा राष्ट्रीय हितों को बढ़ावा देने के लिए सभी देशों से परस्पर संवाद के माध्यम से विदेश नीति को पुर्नपरिभाषित किया गया है। भारत की वर्त्तमान विदेश नीति दुसरे देशों से केवल रक्षा उत्पादों की खरीद तक सीमित नहीं है, बल्कि तकनीति ज्ञान के क्षेत्र में भारत विकसित देशों के साथ प्रयत्नशील है। वर्त्तमान में भारत अपने सामरिक हितों की पुर्ति के लिए अमेरिका और रूस को संतुलित रूप से साथ लेकर चल रहा है। सामरिक के साथ–साथ वाणिज्यिक हितों की पूर्ति के लिए भारत अपने पड़ोसी देशों पर फोकस कर रहा है।

पहले विदेशी दौरे के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रणीतिक रूप से हिन्द महासागर के द्वीपीय देश मालदीव को चुना है। चुनाव में मालदीव की जनता ने चीन समर्थित सरकार को सत्ता से वेदखल कर दिया था। हलांकि उससे पहले ही वहॉ की सरकार कई छोटे द्वीप चीन को पट्टों पर दे चुकी थी। मालदीव में लोकतंत्र बहाली के बाद से भारत ने उसे पूरी उदारता से वित्तीय मदद मुहैया कराई है इससे मालदीव को चीनी कर्ज के जाल से निकलने में मदद मिली है।

वर्त्तमान परिदृष्य में देखें तो ज्ञात होता है, पाकिस्तान और चीन मिलकर भारत के सामने बड़ी सामरिक चुनौती पेश कर रहें है। प्रधानमंत्री मोदी ने भारत और चीन के बीच संबंधों को मजबूती प्रदान करने के लिए अक्टूबर में शी जिनपिंग को अनौपचारिक सम्मेलन के लिए भारत आमंत्रित किया है। इससे पहले संबंधों में तल्खी दुर करने के लिए इससे पहले चीन बुहान में दोनों नेता ऐसी ही एक बैठक कर चुके है। इसके अलावा अमेरिका से रिश्ते वेहतर होने के बवजूद डोनाल्ड ट्रंप को साध्य पाना भारत के लिए खासा चुनौतीपूर्ण होगा। ईरान और वेनेजुएला से तेल आयात पर प्रतिबंध लगाने से ट्रंप पहले ही भारत पर बोझ बढ़ा चुके है।

यह स्वीकार करते हुए कि किसी भी देश की विदेश नीति केवल नई सरकार आ जाने से अपने पुराने संबंधों को तोड़ नहीं देती। वर्त्तमान सरकार की पड़ोस पहले नीति कांग्रेस के नेतृत्व वाली संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन सरकार की दशकों पुरनी नीति के अनुसार ही है, जिसने भारत के पड़ोसीयों के साथ दोस्ती पर जोर दिया था। उदाहरण के लिए बाग्लादेश के साथ द्विपक्षीय संबंधें में मजबूती आई है, इसी तरह अफगानिस्तान के साथ संबंध दोस्ताना ही रहे जहॉ आम जनता के साकारात्मक भाव से रिश्तों में बढ़ोतरी तो हुई है उन्हे आगे बढ़ने की आवश्यकता पर जोर दिया गया है।

श्रीलंका के साथ वर्त्तमान सरकार के संबंध निश्चित रूप से परंपरा से हट कर रहे है। राजनीतिक रूप से स्थिर भारत सरकार ने भारत–श्रीलंका संबंधें को सफलतापूर्वक तमिल राजनीति से अलग निकाल कर उन्हें सांस्कृति एकता के दायरे में लाया। हालॉकी 2015 से भारत समर्थक मैत्रीपाल सिरीसेना

सरकार के सत्ता में होते हुए भी श्रीलंका द्वीप पर भारत–चीन की रणनीति जगह को कम करने में बहुत सफल नहीं रहा है। नेपाल और पाकिस्तान इस क्षेत्र मेभारत की सबसे बड़ी चुनौती को रेखांकित करते है। पाकिस्तान के साथ संबंध सख्त गतिरोध में फंसे है। ये संबंध 2008 के मुम्बई हमलों के बाद से सबसे अधिक कटुतापूर्ण स्थिति में है। सर्जिकल स्ट्राइक 2016 के अपने स्वतंत्रता दिवस के भाषण में प्रधानमंत्री मोदी का बलूचिस्तान का उल्लेख कुलभूषण जाधव विवाद, पठानकोट उरी हमला तथा भारत द्वारा बालाकोट में एयर स्ट्राइक आदि ने दोनों देशों के रिश्तों में अधिक दुरियॉ पैदा की है। नेपाल में 2015 के भूकंप के बाद भारत की मदद और समर्थन के होते हुए भी नेपाल के नए संविधान ने काठमांडू और नई दिल्ली के बीच दरार पैदा की और मधेसी आन्दोलन के कारण यह दरार और भी चौड़ी हो गई है। पिछले कुछ वर्षो से संकेत मिलता है कि नेपाल में भारत का प्रभाव कम हो रहा है।

मॉरीशस और सेशेल्स के द्वीप देशों की यात्रा और हिन्द महासागर रिम एसोसिएशन के साथ संबंध बनाने के आलावा भारत सरकार ने हिंद महासागर क्षेत्र में एक मजबूत नींव बनायी है। ऊर्जा, सामरिक और आर्थिक मामलों में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के दौरे महत्वपूर्ण थे और इन दौरे ने हिन्द महासागर में भारत की समुद्री भूमिका पर जोर दिया। आई ओ आर में नई दिल्ली की विदेश नीति को एक विशेष प्रोत्साहन मिला जब जनवरी 2016 में विदेश मंत्रालय में एक अलग आई ओ आर. डिवीजन की स्थापना हुई। प्रधानमंत्री मोदी की पहले से दक्षिण पूर्व एशिया में भारत की एक्ट ईस्ट नीति में नयापन और सामरिक गंभीरता आई जो 1990 के दशक की नीति का पुर्नजागृत रूप है। यह केवल नाम का परिवर्त्तन नहीं है बल्कि यह एक्ट ईस्ट दक्षिण–पूर्व एशिया के साथ व्यापार और निवेश संबंधों को बढ़ाने में भारत की उत्सुकता को भी दर्शाती है।

भारत की विदेश नीति में आये बदलाव से भारत और जापान के बीच संबंध गहरे हुए है और ये संबंध 2015 में बढ़कर विशेष सामरिक एवं वैश्विक साझेदारी तक पहुॅच गया है। भारत और जापान के बीच निर्बाध समन्वय, अवसरचना, असहयोग, परमाणु ऊर्जा और तकनीकी के क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रगति वर्त्तमान सरकार की उपलब्धियों को रेखांकित करते है।

भारत चीन पाकिस्तान आर्थिक गलियारे पर चिंताओं के कारण भारत ने बेल्ट और रोड फोरम को छोड़ दिया और चीन पर नजर बनाए रखने के साथ अमेरिका, जापान और आस्ट्रेलिया के साथ चर्तुभूज सहयोग स्थापित करने के लिए वार्ता में भाग लिया।

प्रधानमंत्री मोदी की विदेश नीति भारत अमेरिका रणनीति सझेदारी के मामले में सफल रही, जहॉ द्विपक्षीय भागीदारी के मामले में दोनों ने रक्षा सहयोग आधारभूत लॉजिस्टिक समझौतों और भारत प्रशांत क्षेत्र में सहयोग सहित कई मुद्दों पर प्रगति दिखाई दोनों देशों के बीच संबंध साझाा हितों के कारण बढ़े है। हालांकि इस बीच रूस के साथ संबंध प्रभावित हुए है क्योंकि भू–राजनीतिक गतिशीलता में बदलाव के कारण भारत–अमेरिका के संबंध घनिष्ठ हुए है। विशेष रूप से रक्षा मामलों में इसके विपरीत रूस, चीन और पाकिस्तान के संबंध आपस में मजबूत हुए है।

**चुनौतियॉः–**

विदेश नीति के मामले में भारत की सबसे बड़ी चुनौती केवल यह नहीं होगी कि अपने पड़ोसियों तथा आसियान एवं पश्चिम एशिया समेत दूरवर्ती पड़ोसियों को किस तरह संभाला जाये बल्कि विश्व की प्रमुख शक्तियों के साथ अपने संबंधों को दुरूस्त करना भी एक बड़ी चुनौती होगी। देखा जाए तो चीन की वैश्विक महत्वाकांक्षाओं के कारण उसके साथ संबंध बनाए रखना भारत के लिए चुनौतीपूर्ण है। चीन ने अपनी वित्तीय एवं सैनय ताकत के जरिए तथा दरियादिली से खैरात बांटकर भारत के पड़ोसी देशों में अपना मजबूत प्रभाव जमा लिया है जो हमारी विदेश नीति के उद्देश्यों की राह में बाधक बन सकता है। चीन की स्ट्रिग ऑफ पर्ल्स राणनीति उसकी चीन, पाकिस्तान अर्थिक गलियारा परियोजना और वेल्ट रोड परियोजनाओं के लिए सटीक बैठती है। वास्तव में इससे चीन का प्रभाव और भी आगे तक चला जाता है जो रणनीतिक रूप से हमारे लिए असहज हो सकता है।चीन ने नेपाल और श्रीलंका के साथ अपने रक्षा संबंध और भी मजबूत किये है जो भारत के लिए चिंता का विषय है।

चीन, रूस और पारंपरिक एवं पारस्परिक संबंधों में खटास लाने की भी कोशिश कर रहा है। रणनीतिक वैश्विक मंच पर जगह पाने के भारत के दावे का चीन द्वारा लगातार विरोध किया जा रहा है जैसे– परमाणु आपूर्तिकर्त्ता समूह में शामिल होने तथा संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में स्थायी सदस्यता पाने के हमारे प्रयासों को विफल करना आदि। चीन–पाकिस्तान–रूस के बीच कुछ समय हुई बैठकें तथा भारतीय सैन्य प्रतिष्ठानों पर आतंकी हमले होने के बावजूद रूस, पाकिस्तान सैन्य अभ्यास इसका एक अन्य उदाहरण है।

रूस के साथ भारत के रिश्ते बहुत पुराने और विविधता भरे हैं, लेकिन अमेरिकी प्रशासन के साथ भारत की बढ़ती निकटता से भरोसेमंद और पुरने दोस्त या रूसी हिन्दी भाई–भाई जैसे भावनात्मक संबंधों की स्थिति जो पहले थी अब वह स्थिति नहीं है। हालॉकि भारत के साथ आर्थिक रिश्ते रूस को बेहतर संबंध बनाये रखने के लिए मजबूर कर सकते है क्योंकि खनिजों तथा हीरों के अलावा सैन्य उपकरणों तथा असैन्य परमाणु प्रतिष्ठानों केलिए भारत अब भी उसके बड़े बाजारों में शामिल है। जहॉ तक अमेरिका की बात है तो वहॉ भारतीय समुदाय का मजबूत प्रभाव तथा राष्ट्रपति ट्रंप की कारोबारी रूख रखने वाली टीम उसे भारत की ओर केन्द्रित रखने में सहायक हो सकती है। रोजगार और विनिर्माण

RRIJM 2015, All Rights Reserved 

गतिविधियॉ वापस अमेरिका में लाने तथा कर ढ़ॉचों में प्रस्तावित बदलावों की नीतियों से भारत में अमेरिकी वित्तीय निवेश में कमी आने की आशंका तो है, जिससे भारतीय अर्थव्यवस्था को कुछ दिक्कतें हो सकती है। वर्त्तमान संकट के दौर में भारत के लिए प्रौद्योगिकियों और संसाधनों को प्राप्त करने का अवसर है।

इसी प्रकार वर्त्तमान संकट हमें सत्ता के अर्न्तराष्ट्रीय संतुलन में अपनी आपेक्षिक स्थिति में सुधार लाने का भी अवसर प्रदान करता है। गरीब देशवासियों के विकास के लिए एक अवसर प्रदान करता है जिससे कि सही मायनों में हमारा विकास समावेशी बन सके।

हमारा पड़ोस हमारे लिए सबसे बड़ी चुनौती और सर्वोत्तम अवसर प्रदान कर रहा है। स्पष्ट रूप से पाकिस्तान के संबंध काफी दबाव में है और यह सुनिश्चित करने के लिए पाकिस्तान की घटनाओं का दुष्प्रभाव भारत पर न पड़े, हमें सावधानी पूर्वक प्रबंधन करने की आवश्यकता होगी।

**निष्कर्षः–**

भारतीय विदेश नीति के अवसर एवं चुनौतियों में भारत ने विशेष गति से अपने पड़ोसी देशों के साथ अपना संबंध स्थापित किया है। सभी देशों से एक समान व्यवहार करने का प्रयास किया। भारतीय विदेश नीति शान्ति बनाए रखने पर अधिक विश्वास करती है।

**संदर्भ**


1. फड़िया बी.एल. अर्न्तराष्ट्रीय राजनीति, सहित्य पब्लिकेशन, आगरा 2004, पृष्ठ संख्या– 149.
2. पंत पुष्पेश 21वीं शताब्दी में अर्न्तराष्ट्रीय संबंध, टाटा एम.सी. ग्रो हिल(GRAW Hill) 2010 भाग 05, पृष्ठ संख्या–10.
3. बी.बी.सी न्यूज, 30 नवम्बर 2007 मूल से 25 दिसंबर 2018 को पुरालेखित अभिगमन तिथि 24 जून 2014.
4. NAM. Gov. Za The Non-Aligned Movement 21 सितंबर 2001 से 21 अगस्त 2011 को पुरालेखित अभिगमन तिथि 27 अगस्त 2007.
5. आई.एस.बी.एन. 9780060505943 मूल से 12 दिसंबर 2011 को पुरालेखित अभिगमन तिथि 22 जुलाई 2011.
6. फड़िया बी.एल. अर्न्तराष्ट्रीय राजनीतिक साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा, 2004 पृष्ठ संख्या 328.


RRIJM 2015, All Rights Reserved 